रात्रि क्लास 20-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

रूहानी बाप बच्चों को समझाते हैं अपने को आत्मा समझो और सदैव बाप को याद करते रहो। नये2 बच्चे नये2 बातें सुनते हैं। और कहां भी ऐसे नहीं कहेंगे। बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। शिव बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह नई आदत डालनी है सिर्फ एक जन्म लिये। बाप को याद करो। इनको ही योगअग्नि कहा जाता है। भारत का प्राचीन योग जिससे स्वर्ग की स्थापना हुआ यह किसको भी पता नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी रिपीट भी कहते हैं तो उनका डियुरेशन भी पूरा होना चाहिए ना। शास्त्रों में कितने बड़े2 गपोड़े लगा दिये हैं। लाखों वर्ष आयु कह देते। नई और पुरानी का किसको भी पता नहीं है। बाप ही आकर समझाते हैं। मीठे2 बच्चों यह पुरानी तमोप्रधान दुनिया है। कलियुग है ना। सो भी कलियुग का अन्त है। यह बना बनाया खेल बना हुआ है। इनको रांग भी नहीं कहेंगे। ईश्वरीय रचना स्क्युरेट है। पुरानी और नई भी है। बाप ने बताया है यह 5000वर्ष का खेल है। मनुष्य तो घोरअंधियारे में हैं। यह भी शास्त्रों में गायन है कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े थे जबकि बाप आये थे। शास्त्रवादी कितना चमकते हैं। व्यास भगवान था तो एक को माने ना। फिर भगवान ठिकर भितर, कण2 में कह देते। मुंझ हो गई है। बाप आकर बच्चों को समझाते हैं। यह खेल ही 5000वर्ष का है। तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया को सतोप्रधान, पुरानी दुनिया को तमोप्रधान कहा जाता है। यह पुरानी दुनिया है। दुनिया थोड़े ही यह बातें जानती है। जिसको नालेज नहीं उनको मूर्ख कहा जाता है। नालेजफुल एक फादर ही है। वह समझते हैं भगवान जानीजाननहार है। सभी के दिलों को जानते हैं। बाप समझाते हैं मैं नालेजफुल हूं। मेरे में सृष्टि का चक्र का नालेज है। पतित-पावन भी उस निराकार बाप को ही कहा जाता है। कृष्ण को कब कह नहीं सकते हैं। भक्ति मार्ग में कितना अज्ञान अंधियारा है। बाप बैठ समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन क्या है वह भी समझाया है। चित्र भी दिखाते हैं विष्णु के नाभी कमल से ब्रह्मा निकला। उनको शास्त्र भी दिखाते हैं। सूक्ष्मवतन में तो शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सिर्फ सा० का ड्रामा में पार्ट है। यह बातें अभी तुम बच्चे जानते हो। ऊपर में ब्रह्मण्ड हम आत्माएं जहां रहती हैं। वह समझते हैं अण्डे मिसल आत्मा है। इतनी बड़ी तो हो न सके। बाबा है परम पिता परम-आत्मा। सिर्फ वह है सुप्रीम। बाकी आत्मा में कोई फर्क नहीं है। वह एवर प्युर रहते हैं परमधाम में। परमपिता परमात्मा को ही सभी याद करते हैं। बाप आकर पतितों को पावन बनाते हैं। इस सारे झाड़ की नालेज भी बाप ही दे सकते हैं। यह कोई भी नहीं जानते। सन्यासी आदि सभी नेती2 कहते रहते। रचयिता और रचना को नहीं जानते। अच्छा ल०ना० को रचयिता और रचना का ज्ञान है? कब यह ख्याल किया है। ल०ना० जो स्वर्ग के मालिक हो कर गये हैं, उन से कब पूछा है। इन से कोई पूछे तो यह भी कहेंगे नेती2। ड्रामा अनुसार जब बाप आये तब ज्ञान दे। क्योंकि ज्ञान से होती है सदगति तो बाप संगम पर ही आकर सर्व की सदगति करते हैं। यह है पढ़ाई। इसमें नम्बरवार पढ़ने वाले हैं। यह है बेहद की पढ़ाई। जिससे गति-सदगति, मुक्ति-जीवनमुक्ति होगी। बाकी लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। तुम कितना समझाते हो। प्रजा बनती जाती है। बाकी गायन है कोटों में कोई मुझे जानते हैं। 400करोड़ ही कोट है सभी तो नहीं जानते हैं। सतयुग आदि में हैं देवतायें बाकी सभी कहां गये यह ख्याल में नहीं है। किनकी बुधि में है 40हजार वर्ष बाद बाप आवेंगे। अभी तुम समझते हो। अभी तुम श्रीभत पर योगबल से अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो। सतयुग में इन्हों का राज्य था। अभी इन्हों ने किससे जीता। दिखाते हैं असुरों और देवताओं की लड़ाई लगी। परन्तु लड़ाई की तो बात ही नहीं। पत्थर बुधि है ना। इसलिये मैं आकर समझाता हूं। कहां वह स्वर्ग की खुशी कहां यह नर्क का दुःख। सतयुग को कहा जाता है सुखधाम। तुम समझते हो 5000वर्ष पहले हम सुखधाम में थे। कितना रात-दिन का फर्क है। ऐसे नहीं कहना है हम शास्त्रों को नहीं मानते हैं। बोलो हम तो 63 जन्म शास्त्र पढ़े हैं। तुमको थोड़े ही पता है शास्त्र कब से शुरू हुई है। पहले नम्बर का गीता है माईबाप। बाकी हैं उनकी रचना। बाल बच्चे। अभी तुम्हारी युध है 5 विकारों रूपी रावण से। तुमको अहिंसक देवी—

20-10-68

2

देवताधर्म वाला बनना है। तुम डबल अहिंसक बनते हो। कड़ी से कड़ी हिंसा है विकार की। गांधी भी गाते थे पति-पावन ... सभी भक्त हैं भगवान एक है। जो सभी को श्रृंगारने आते हैं। बाप बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं हमारे अन्दर की वह जानते हैं। वही सुख, दुःख देते हैं। उनको कहा जाताहै भूली। सन्यासियों ने गीता में कितनी एडल्ट्रेशन कर दी है। पहले2 पायन्ट सर्वव्यापी कीहैं। कितना घाटा डाल दिया है। यह भी ड्रामा नूंध है। फिर भोहोगा। आधा कल्पभक्ति जिन्दाबाद फिर आधा कल्प ज्ञानजिन्दाबाद। शिवरात्रि कहते हैंपरन्तु अर्थ नहीं जानते हैं। ऊंच ते ऊंच फिर नीच तेनीच। फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। मैं आता ही उस तन में हूं जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। अभी तुम फरिश्ता बन रहे हो। पिछाड़ी में सभी की रिजल्ट कासा० होगा। ट्रन्सफर होने पहले तुमको मालूम होगा। फिर नई राजधानी में चले जावेंगे। कितना ट्रन्सफर होते हैं। यह बाप की एक ही पढ़ाई है। सतयुगी देवी देवता धर्म की स्थापना करने की। इन्हीं की राजधानी थी ना। रामचन्द्र की भी राजधानी थी। तुम जानते हो संगम पर राजधानी स्थापन होती हैं। तुमसभी हो एडाप्टेड बच्चे। ब्राह्मणों द्वारा ही बाप स्थापना करते हैं। ब्राह्मण है चोटी। विराट रूप का चित्र है। परन्तु वह रांग बना हुआ है। शिव का भी चित्र है नहीं। प्रजापिता ब्रह्मा का भी नहीं है। इस समय तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। वह है देवी सम्प्रदाय। तुम्हारा सरनेम है ब्राह्मण। फिर देवता बनते हो। बाप आकर यह नालेज देते हैं जिससे तुम यह बनते हो। तुम अभी जानते हो। अब वापस घर जाना है। पुरानी दुनिया को भूलने में टाईम लगता है। इतनी छोटी सी अविनाशी आत्मा में अविनाशी रिगार्ड भरा हुआ है। एक भी पार्ट से निकल नहीं सकता। एक्युरेट टाईम पर जब बाप को आना होता हैआकर समझाते हैं। सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। माया जीत जगत जीत बन जावेंगे। सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। आधा कल्प रावण का राज्यहैयह कोई को पता नहीं है यह है नम्बरवन दुश्मन। हर वर्ष जलाते हैं परन्तु समझ कुछ भी नहीं हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट औरनमस्ते

रात्रिक्लास:- 21-10-68 :-

***

21-10-68

हो सकता। वह है ही वायसलेस वर्ल्ड। यह है विषस वर्ल्ड। अभी तुम बेगर से प्रिन्स बनने वाले हो। भारतवासी ही स्वर्गवासी बनते हैं। स्वर्ग में है ही देवीदेवताओं का राज्य। इस समय भारतवासी नर्कवासी हैं। बाबा पूछते हैं जिस समय हाथ उठाया हम नर से ना० बनेंगे और बनने ही आये हैं। पढ़ाते भी हैं निराकार ब्रह्मभगवान। उनका यह है रथ। सो भी बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। दूर देश का रहने वाला कृष्ण थोड़ेही है। दूर देश में तो आत्मायें रहती हैं। आत्मायें बाप को बुलाती हैं ऊपर से आओ। है तो निराकार। वह निराकार शिव आकर बतलाते हैं। अभी तुम जानते हो हमारे धर्म की स्थापना हो रही है। पवित्र भी बनते हैं राजा भी बनते हैं। अभी तुम पवित्र बनते हो। बाप को याद करते हो। इसमें ही माया विघ्न डालती है। युध इसमें ही चलती है। अभी तुम कहते हो हम ना० बनेंगे तो ~~[illegible]~~ बच्चों को निश्चय है हम पुरुषार्थ करते हैं सतोप्रधान बन फुल पास होवें। परन्तु सभी तो बन नहीं सकेंगे। कई को ज्ञान के आधार से खुशी होती है। नई दुनिया है पावन दुनिया। यह है पतित दुनिया। तो अभी तुम जानते हो बेगर टु प्रिन्स बनेंगे। तुमको कोई प्रिन्स नहीं पढ़ाते हैं। कृष्ण को प्रिन्स कहा जाता है। वह तो है सतयुग का जन्म। यह तो बाप कहते हैं मुझे शरीर का आधार लेना पड़ता है। कोई कोई अक्षर गीता के सत्य हैं। बाप बच्चों को भी कहते हैं यह ओपीनियन लिखाओ। जज करो गीता किसने सुनाई। नालेजफुल ज्ञान सागर किसको कहते हो? कृष्ण को तो कह न सकेंगे। उनमें वह ज्ञान है नहीं। न नारायण में ही हैं। कृष्ण तो छोटा प्रिन्स है। अगर ना० में यह ज्ञान होता तो यह ज्ञान परम्परा चलता। तो तुम बच्चों को अन्दर में अति ईन्द्रिय सुख रहना चाहिए। स्कूल में टीचरअथवा स्टुडन्ट समझते हैं यह अच्छे2 मार्कस से पास होंगे। इतनी ब्रह्माकुमारियां हैं इनमें होशियार भी बहुत हैं। अच्छे ते अच्छे नम्बरवन ममा थी। फिर कहेंगे कुमारका है* जनक है, मनोहर है। नम्बरवार तो है ना। एक जैसे तो हो न सके। तो अभी तुमको नारायणी नशा है हम बेगर टु प्रिन्स बनते हैं। खुशी होनी चाहिए ना। यहां तुम नई दुनिया के लिये ही पढ़ने आते हो। नर्क पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगा। इनको ही महाभारत की लड़ाई कहा जाता है। तो बच्चों को निश्चय है ना। पुरुषार्थ तो सभी का चल रहा है ना। बाप पतितपावन वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी है। ल०ना० को वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी नहीं कहेंगे। बाप ही सभी वेद-शास्त्रों आदि को जानते हैं। उस बाप का कोई बाप होगा क्या। वह तो ऊंच ते ऊंच है। खुद कहते हैं मैं नोलजफुल हूं। मैं सभी का बाप हूं मेरा कोई बाप होगा। मैं सभी का टीचर हूं मेरा कोई टीचर होगा। मैं सभी का ~~गुरु~~ सद्गुरु हूं मेरा फिर कोई गुरु होगा। नहीं। मेरा कोई बाप टीचर गुरु हो न सके। मैं ही सभी का बाप हूं। मेरा कोई गुरु हो न सके और सभी के होते हैं। मैं सभी को सत बाप सत्टीचर सद्गुरु लिबरेटर हूं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

पायन्ट्स:- ब्र०वि०शं० का भी ज्ञान है। अर्थ भी है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना। मुख्य है दो
****
बात। स्थापना और पालना। दोनो रूप खड़े हैं। बाकी विनाश तो होना ही है। ब्रह्मा के बच्चे जो पैदा होंगे वही देवता बनेंगे। शंकर का कोई वृतान्त निकल नहीं सकता। सूक्ष्मवतन में ऐसी कोई चीज़ होती नहीं। आकाश में कुछ है थोड़ेही। एरोपलेन पक्षी आदि उड़ते रहते हैं। पक्षियों के अकल से ही उन्हों ने कापी किया है। चिड़िया आदि कैसे उड़ सकती है तो उन्हों को देख फिर वैठ एरोपलेन आदि बनाई है। जो फिर वहां भी होंगी। अभी यह है माया का पम्प। इनको कहा जाता है फाल आफ पम्पिया। पतन और उत्थान। कितने बम्ब आदि बनाते हैं। समझते हैं इन से विनाश होगा। फिर भी बनाते रहते। समझते हैं लड़ाई तो लगती ही रहती है। कलियुग अजन्म छोटा बच्चा है। 40हजार वर्ष आयु देते हैं। बाप सभी को मिलाकर 5000वर्ष कहते। अभी बाप बैठ समझाते हैं बच्चे मामेकं याद करो। तुम भी यहां हो, बाप भी यहां ही है तो इनको ही जीवात्माओं और परमात्मा का मेला कहा जाता है। यह है कल्याणकारी मेला। बाप आते हैं बच्चों को सुखधाम शान्तिधाम जाने का रास्ता बताने तो उनकी मत पर चलना चाहिए ना। अच्छा=बच्चों=को=रूहानी=बाप दादा=का=याद=प्यार=गुडनाईट